रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर

समूचे विश्व में हिन्दी भाषा को मिल रही नयी दृष्टि–कुलपति प्रो. मिश्र

हिन्दी एवं भाषा विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय अंतरराष्ट्रीय वेबिनार का द्वितीय दिवस

जबलपुर 13 सितम्बर। विश्व परिदृश्य में हिन्दी के प्रचार–प्रसार को देखते हुए ऐसा लगता है कि अब वह समय दूर नहीं जब इसे संयुक्त राष्ट्रसंघ की भाषा न बनाया जा सके। विश्वस्तर पर बढ़ रहे आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक अन्तरू सम्बन्धों के कारण वैचारिक स्तर पर एक वैश्विक चेतना का प्रादुर्भाव हो रहा है जिससे समूचे विश्व में हिन्दी भाषा को एक नयी दृष्टि मिल रही है और अन्तर्राष्ट्रीय विचार धाराओं का परिप्रेक्ष्य वर्तमान हिन्दी साहित्य में पूर्णतरू परिलक्षित हो रहा है। उपरोक्त उद्‌गार माननीय कुलपति प्रो. कपिल देव मिश्र ने सोमवार को त्रिदिवसीय अंतरराष्ट्रीय वेबिनार के द्वितीय दिवस की अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किये।

रानी दुर्गावती वि.वि. के हिन्दी एवं भाषा विज्ञान विभाग द्वारा 'हिन्दी का वैश्विक परिदृश्य' विषय पर आयोजित त्रिदिवसीय अंतरराष्ट्रीय वेबिनार के द्वितीय दिवस विषय प्रर्वतन करते हुए संयोजक एवं विभागाध्यक्ष प्रो. धीरेन्द्र पाठक ने कहा कि निः संदेह आज हिन्दी का फलक विस्तृत हुआ है। भारत के साथ–साथ आज हिन्दी विश्व भाषा बनने को तैयार है। हिन्दी के प्रचार–प्रसार और विकास में सभी भाषा–भाषियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वैश्विक फलक पर हिन्दी को स्थापित करने के लिए जहां एक ओर साहित्यकारों, विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं ने इसकी पृष्ठभूमि तैयार की तो वहीं दूसरी तरफ हिन्दी फिल्मों, गीतों, विज्ञापनों, बाजार, कम्प्यूटर, इंटरनेट आदि ने इसे विस्तीर्ण किया है।

हिन्दी के प्रचार प्रसार के लिए संकल्पित हों–

अंतरराष्ट्रीय वेबिनार में मुख्य अतिथि माननीय कुलपति अवधेश प्रताप सिंह विवि रीवा प्रो. राजकुमार आचार्य ने कहा कि कोई भी भाषा भाषण या नारों से समृद्ध नहीं होती है। वह समृद्ध होती है व्यापार और उद्योग से, रोजी–रोजगार से। हिन्दी वास्तव में व्यापार और रोजगार की भाषा है। हमें हिन्दी दिवस मनाने की रस्म अदाएगी के बजाय इसके विकास के लिए दृढ़ संकल्पित होना चाहिए।

गौरान्वित करती है हिन्दी की समृद्धि–

वेबिनार में मुख्य वक्ता के रूप में आईसीसीआर वारसा यूनिवर्सिटी पोलैण्ड के डॉ. सुधांशु शुक्ला ने अपने संबोधन में कहा कि हिन्दी की शक्ति और सामर्थ्य का बोध पूरी दुनिया को हो चुका है। तभी तो कार्पोरेट कंपनियों ने अपने उत्पाद को बेचने के लिए अंग्रेजी के साथ हिन्दी को अपना लिया है। हिन्दी भाषा के कारण ही हमें अंतरराष्ट्रीय पहचान मिली है। हिन्दी की समृद्धि हमें गौरवान्वित करती है। हिन्दी हमारी माटी–पानी की भाषा है। यह बाजारू या बिकाऊ भाषा नहीं है। हिन्दी वास्तव में हमारे दिल की भाषा है।

मानक हिन्दी का प्रयोग करें–

वेबिनार में विशिष्ट वक्ता के रूप में रादुविवि हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ला ने कहा कि हिन्दी के प्रचार–प्रसार के रूप में तथ्यात्मक रूप से अधिक बात करनी चाहिए हमारा क्या कर्तव्य है, हमारा क्या दायित्व है इस पर विचार होना चाहिए। मानक हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग ही हिन्दी भाषा के प्रति सच्ची सेवा है। विशिष्ट वक्ता तेजपुर विवि असम के प्रो. सूर्यकांत त्रिपाठी ने कहा कि हिन्दी को आज हर जगह पहचान मिली है और इससे हमारी पहचान तथा हमारा अस्तित्व भी जुड़ा है इसलिए यह परम आवश्यक है कि हिन्दी को उचित सम्मान कि दृष्टि से देखा जाए क्योंकि यह न सिर्फ भारत अपितु विश्व में उभरती एक नई पहचान है।

वैश्विक पहचान के लिए महत्वपूर्ण है हिन्दी–

वेबिनार में विशिष्ट वक्ता के रूप में डॉ. पवन कुमार सिंह निदेशक भारतीय प्रबंधन संस्थान, त्रिरुचिरापल्ली ने कहा कि आज भूमंडलीयकरण के इस दौर में अपनी राष्ट्रीय स्वतंत्रता, संप्रभुता और विकास के साधनों की रक्षा के संघर्ष में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका है। इस संघर्ष में भारत की भूमिका के साथ हिंदी भी अपनी ऐतिहासिक भूमिका अदा करेगी ऐसी संभावना है। संचालन हिन्दी एवं भाषा विज्ञान विभाग की डॉ. विपुला सिंह ने किया। स्वागत भाषण डॉ. नीलम दुबे एवं आभार प्रदर्शन श्रीमती राखी चतुर्वेदी ने किया। इस अवसर पर प्रो. प्रज्ञा मिश्रा, चित्रकूट, प्रो. अलकेश चतुर्वेदी, प्रो. नरेन्द्र शुक्ला, हिंदी विभाग की डॉ. आशा रानी सहित अन्य विद्वतजन मौजूद रहे।